WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रेस

मंगलवार 23 मई, 2023 | अंक - 385

www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

अच्छी उपज के लिए वैज्ञानिक विधि से करें अरहर की बुवाईः डॉ. अखिलेश मिश्रा

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर बिजेन्द्र सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने देर से अच्छी उपज के लिए करें वैज्ञानिक विधि से अरहर की बुवाई विषय पर एडवाइजरी किसानों हेतु जारी की है। डॉ मिश्रा ने बताया कि अरहर हमारे देश की प्रमुख दलहनी फसल है जिसे मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम पखवाड़े तक बुवाई की जाती है। उन्होंने कहा कि अरहर फसल द्वारा दलहन उत्पादन के साथ-साथ 150 से 200 किलोग्राम वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता में वृद्धि करती है। उन्होंने बताया कि असिंचित एवं शुष्क क्षेत्रों में अरहर की खेती लाभकारी सिद्ध हो सकती है। डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने बताया कि 100 ग्राम अरहर की दाल से ऊर्जा -343 किलो कैलोरी,कार्बोहाइड्रेट- 62.78 ग्राम, फाइबर -15 ग्राम, प्रोटीन- 21.7 ग्राम तथा विटामिंस जैसे थायमीन (बी1)-0.64 3 मिलीग्राम, रिबोफैविविन (बी2)-0.187 मिलीग्राम, नियासिन (बी3)-2.965 मिलीग्राम, तथा खनिज पदार्थ जैसे कैल्शियम 130 मिलीग्राम, आयरन 5.23 मिलीग्राम, मैग्नीशियम 183 मिलीग्राम, मैग्नीज 1.791 मिलीग्राम, फास्फोरस 367 मिलीग्राम, पोटेशियम 1392 मिलीग्राम, सोडियम 17 मिलीग्राम एवं जिंक 2.76 मिलीग्राम आदि पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी है। डॉक्टर मिश्रा ने किसानों को सलाह दी है कि अरहर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे नरेंद्र अरहर-1, नरेंद्र अरहर-2, आजाद अरहर, अमर, पूसा-9,बहार, मालवीय -13, मालवीय-6 एवं आई पी ए- 203 प्रमुख है। भूमि की चयन हेतु उन्होंने बताया कि अच्छी जल निकास वाली हल्की दोमट एवं भारी मृदायें सर्वोत्तम होती हैं अरहर का बीज 12 से 15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से का कतारों से कतार की दूरी 60-75 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 20 से 25 सेंटीमीटर पर रखकर बुवाई करनी चाहिए। रोगों की रोकथाम हेतु बुवाई के पूर्व ट्राइकोडरमा विरिडी 10 ग्राम प्रति किलो बीज या थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेंडाजिम से शोधित करना चाहिए तत्पश्चात 5 ग्राम राइजोबियम + 5 ग्राम पीएसबी कल्चर से प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बोयें। उन्होंने बताया कि बुवाई से पूर्व 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम सल्फर गंधक प्रति हेक्टेयर बीज के नीचे देना चाहिए। उन्होंने सलाह दी है कि 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देने से फसल पैदावार में बढ़ोतरी होती है। डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से अरहर की खेती करते हैं तो असिंचित क्षेत्रों में 12 से 16 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा सिंचित क्षेत्रों में 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर अरहर का उत्पादन होता है।

Sign in to edit and save changes to this file.

वर्ष : 8, अंक : 04 पृष्ठ : 12
कानपुर महानगर, बुधवार
24 मई, 2023
मूल्य ₹ 3.00

शाश्वत टाइम्स

हिन्दी दैनिक

www.shashwattimes.com

अच्छी उपज के लिए वैज्ञानिक विधि से करें अरहर की बुवाईः- डॉक्टर अखिलेश मिश्रा

शाश्वत टाइम्स कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर बिजेन्द्र सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने देर से अच्छी उपज के लिए करें वैज्ञानिक विधि से अरहर की बुवाई विषय पर एडवाइजरी किसानों हेतु जारी की है। डॉ मिश्रा ने बताया कि अरहर हमारे देश की प्रमुख दलहनी फसल है जिसे मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम पखवाड़े तक बुवाई की जाती है। उन्होंने कहा कि अरहर फसल द्वारा दलहन उत्पादन के साथ-साथ 150 से 200 किलोग्राम वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता में वृद्धि करती है। उन्होंने बताया कि असिंचित एवं शुष्क क्षेत्रों में अरहर की खेती लाभकारी सिद्ध हो सकती है। डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने बताया कि 100

ग्राम अरहर की दाल से ऊर्जा -343 किलो कैलोरी,कार्बोहाइड्रेट- 62.78 ग्राम,फाइबर -15 ग्राम, प्रोटीन- 21.7 ग्राम तथा विटामिंस जैसे थायमीन(बी1)-0.64 3 मिलीग्राम,रिबोफैविविन (बी2)- 0.187 मिलीग्राम, नियासिन (बी3)- 2.965 मिलीग्राम, तथा खनिज पदार्थ जैसे कैल्शियम 130 मिलीग्राम, आयरन 5.23 मिलीग्राम, मैग्नीशियम 183 मिलीग्राम, मैग्नीज 1.791 मिलीग्राम, फास्फोरस 367 मिलीग्राम, पोटेशियम 1392 मिलीग्राम, सोडियम 17 मिलीग्राम एवं जिंक 2.76 मिलीग्राम आदि पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी है।

Sign in to edit and save changes to this file.

(हिन्दी दैनिक)
R.N.I. No. Utthin/2018/76731
(गांव देहात की खबर, शहर पर भी नजर)
दि ग्राम टुडे
उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश से एक साथ प्रसारित
वर्ष : 04 अंक : 311 देहरादून, बुधवार, 24 मई 2023 मूल्य : 2 रुपये पृष्ठ - 8

अच्छी उपज के लिए वैज्ञानिक विधि से करें अरहर की बुवाई.. डॉक्टर अखिलेश मिश्रा

दि ग्राम टुडे, कानपुर।
(नितेश गौतम)

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर बिजेन्द्र सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने देर से अच्छी उपज के लिए करें वैज्ञानिक विधि से अरहर की बुवाई विषय पर एडवाइजरी किसानों हेतु जारी की है। डॉ मिश्रा ने बताया कि अरहर हमारे देश की प्रमुख दलहनी फसल है जिसे मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम पखवाड़े तक बुवाई की जाती है। उन्होंने कहा कि अरहर फसल द्वारा दलहन उत्पादन के साथ-साथ 150 से 200 किलोग्राम वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता में वृद्धि करती है। उन्होंने बताया कि असिंचित एवं शुष्क क्षेत्रों में अरहर की खेती लाभकारी सिद्ध हो सकती है। डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने बताया कि 100 ग्राम अरहर की दाल से ऊर्जा - 343 किलो कैलोरी,कार्बोहाइड्रेट- 62.78 ग्राम,फाइबर -15 ग्राम, प्रोटीन- 21.7 ग्राम तथा विटामिंस जैसे थायमीन(बी1)-0.64 3 मिलीग्राम,रिबोफैविविन (बी2)- 0.187 मिलीग्राम, नियासिन (बी3)- 2.965 मिलीग्राम, तथा खनिज पदार्थ जैसे कैल्शियम 130 मिलीग्राम, आयरन 5.23 मिलीग्राम, मैग्नीशियम 183 मिलीग्राम, मैग्नीज 1.791 मिलीग्राम, फास्फोरस 367 मिलीग्राम, पोटेशियम 1392 मिलीग्राम, सोडियम 17 मिलीग्राम एवं जिंक 2.76 मिलीग्राम आदि पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी है। डॉक्टर मिश्रा ने किसानों को सलाह दी है कि अरहर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे नरेंद्र अरहर-1, नरेंद्र अरहर-2, आजाद अरहर, अमर, पूसा-9,बहार, मालवीय -13, मालवीय- 6 एवं आई पी ए- 203 प्रमुख है। भूमि की चयन हेतु उन्होंने बताया कि अच्छी जल

निकास वाली हल्की दोमट एवं भारी मृदायें सर्वोत्तम होती हैं अरहर का बीज 12 से 15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से का कतारों से कतार की दूरी 60-75 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 20 से 25 सेंटीमीटर पर रखकर बुवाई करनी चाहिए। रोगों की रोकथाम हेतु बुवाई के पूर्व ट्राइकोडरमा विरिडी 10 ग्राम प्रति किलो बीज या थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेंडाजिम से शोधित करना चाहिए तत्पश्चात 5 ग्राम राइजोबियम + 5 ग्राम पीएसबी कल्चर से प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बोयें। उन्होंने बताया कि बुवाई से पूर्व 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम सल्फर गंधक प्रति हेक्टेयर बीज के नीचे देना चाहिए। उन्होंने सलाह दी है कि 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देने से फसल पैदावार में बढ़ोतरी होती है। डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से अरहर की खेती करते हैं तो असिंचित क्षेत्रों में 12 से 16 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा सिंचित क्षेत्रों में 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर अरहर का उत्पादन होता है।

रहस्य संदेश

RNI. NO. UPHIN/2007/20715

41, लखनऊ एंव एटा से प्रकाशित, बुधवार, 24 मई, 2023 पृष्ठ: 8 मूल्य

अच्छी उपज के लिए वैज्ञानिक विधि से करें अरहर की बुवाई– डॉक्टर अखिलेश मिश्रा

(अनवर अशरफ)

कानपुर के कुलपति डॉक्टर बिजेन्द्र सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने देर से अच्छी उपज के लिए करें वैज्ञानिक विधि से अरहर की बुवाई विषय पर एडवाइजरी किसानों हेतु जारी की है। डॉ मिश्रा ने बताया कि अरहर हमारे देश की प्रमुख दलहनी फसल है जिसे मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम पखवाड़े तक बुवाई की जाती है। उन्होंने कहा कि अरहर फसल द्वारा दलहन उत्पादन के साथ–साथ 150 से 200 किलोग्राम वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता में वृद्धि करती है। उन्होंने बताया कि असिंचित एवं शुष्क क्षेत्रों में अरहर की खेती लाभकारी सिद्ध हो सकती है। डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने बताया कि 100 ग्राम अरहर की दाल से ऊर्जा –343 किलो कैलोरी,कार्बोहाइड्रेट– 62. 78 ग्राम,फाइबर –15 ग्राम, प्रोटीन– 21.7 ग्राम तथा विटामिंस जैसे थायमीन(बी1)–0. 64 3 मिलीग्राम,रिबोफैविविन (बी2)–0.187 मिलीग्राम, नियासिन (बी3)–2.965 मिलीग्राम, तथा खनिज पदार्थ

जैसे कैल्शियम 130 मिलीग्राम, आयरन 5.23 मिलीग्राम, मैग्नीशियम 183 मिलीग्राम, मैग्नीज 1.791 मिलीग्राम, फास्फोरस 367 मिलीग्राम, पोटेशियम 1392 मिलीग्राम, सोडियम 17 मिलीग्राम एवं जिंक 2.76 मिलीग्राम आदि पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी है। डॉक्टर मिश्रा ने किसानों को सलाह दी है कि अरहर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे नरेंद्र अरहर–1, नरेंद्र अरहर–2, आजाद अरहर, अमर, पूसा–9,बहार, मालवीय –13, मालवीय– 6 एवं आई पी ए– 203 प्रमुख है। भूमि की चयन हेतु उन्होंने बताया कि अच्छी जल निकास वाली हल्की दोमट एवं भारी मृदायें सर्वोत्तम होती हैं अरहर का बीज 12 से 15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से का कतारों से कतार की दूरी 60–75 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 20 से 25 सेंटीमीटर पर रखकर बुवाई करनी चाहिए। रोगों की रोकथाम हेतु बुवाई के पूर्व ट्राइकोडरमा विरिडी 10 ग्राम प्रति किलो बीज या थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेंडाजिम से शोधित करना चाहिए तत्पश्चात 5 ग्राम राइजोबियम 5 ग्राम पीएसबी कल्चर से प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बोयें। उन्होंने बताया कि बुवाई से पूर्व 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम सल्फर गंधक प्रति हेक्टेयर बीज के नीचे देना चाहिए। उन्होंने सलाह दी है कि 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देने से फसल पैदावार में बढ़ोतरी होती है। डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से अरहर की खेती करते हैं तो असिंचित क्षेत्रों में 12 से 16 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा सिंचित क्षेत्रों में 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर अरहर का उत्पादन होता है।

वर्ष-17 अंक-140 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रुपए कानपुर, बुधवार 24 मई 2023

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, ऐटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात में प्रसारित

दैनिक

RNI N.UPHIN/2007/27090

नगर छाया

आप की आवाज़.....

अच्छी उपज के लिए वैज्ञानिक विधि से करें अरहर की बुवाईः डॉ. अखिलेश मिश्रा

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर बिजेन्द्र सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने देर से अच्छी उपज के लिए करें वैज्ञानिक विधि से अरहर की बुवाई विषय पर एडवाइजरी किसानों हेतु जारी की है। डॉ मिश्रा ने बताया कि अरहर हमारे देश की प्रमुख दलहनी फसल है जिसे मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम पखवाड़े तक बुवाई की जाती है। उन्होंने कहा कि अरहर फसल द्वारा दलहन उत्पादन के साथ-साथ 150 से 200 किलोग्राम वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता में वृद्धि करती हैं। उन्होंने बताया कि असिंचित एवं शुष्क क्षेत्रों में अरहर की खेती लाभकारी सिद्ध हो सकती है। डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने बताया कि 100 ग्राम अरहर की दाल से ऊर्जा -343 किलो कैलोरी,कार्बोहाइड्रेट-62.78 ग्राम,फाइबर -15 ग्राम, प्रोटीन-21.7 ग्राम तथा विटामिंस जैसे थायमीन(बी1)-0.64 3 मिलीग्राम,रिबोफैविविन (बी2)-0.187 मिलीग्राम, नियासिन (बी3)-2.965 मिलीग्राम, तथा खनिज पदार्थ जैसे कैल्शियम 130 मिलीग्राम, आयरन 5.23 मिलीग्राम, मैग्नीशियम 183 मिलीग्राम, मैग्नीज 1.791 मिलीग्राम, फास्फोरस 367 मिलीग्राम, पोटेशियम 1392 मिलीग्राम, सोडियम 17 मिलीग्राम एवं जिंक 2.76 मिलीग्राम आदि पोषक तत्व

प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी है। डॉक्टर मिश्रा ने किसानों को सलाह दी है कि अरहर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे नरेंद्र अरहर-1, नरेंद्र अरहर-2, आजाद अरहर, अमर, पूसा-9,बहार, मालवीय -13, मालवीय- 6 एवं आई पी ए- 203 प्रमुख है। भूमि की चयन हेतु उन्होंने बताया कि अच्छी जल निकास वाली हल्की दोमट एवं भारी मृदायें सर्वोत्तम होती हैं अरहर का बीज 12 से 15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से का कतारों से कतार की दूरी 60-75 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 20 से 25 सेंटीमीटर पर रखकर बुवाई करनी चाहिए। रोगों की रोकथाम हेतु बुवाई के पूर्व ट्राइकोडरमा विरिडी 10 ग्राम प्रति किलो बीज या थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेडाजिम से शोधित करना चाहिए तत्पश्चात 5 ग्राम राइजोबियम + 5 ग्राम पीएसबी कल्चर से प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बोयें। उन्होंने बताया कि बुवाई से पूर्व 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम सल्फर गंधक प्रति हेक्टेयर बीज के नीचे देना चाहिए। उन्होंने सलाह दी है कि 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देने से फसल पैदावार में बढ़ोतरी होती है। डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से अरहर की खेती करते हैं तो असिंचित क्षेत्रों में 12 से 16 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा सिंचित क्षेत्रों में 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर अरहर का उत्पादन होता है।

राष्ट्रीय स्वरूप 24/05/2023 कानपुर

वैज्ञानिक विधि से करें अरहर की बुआई : डॉ अखिलेश मिश्रा

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर बिजेन्द्र सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने देर से अच्छी उपज के लिए करें वैज्ञानिक विधि से अरहर की बुवाई विषय पर एडवाइजरी किसानों हेतु जारी की है। डॉ मिश्रा ने बताया कि अरहर हमारे देश की प्रमुख दलहनी फसल है जिसे मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम पखवाड़े तक बुवाई की जाती है। उन्होंने कहा कि अरहर फसल द्वारा दलहन उत्पादन के साथ-साथ 150 से 200 किलोग्राम वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता में वृद्धि करती है। उन्होंने बताया कि असिंचित एवं शुष्क क्षेत्रों में अरहर की खेती लाभकारी सिद्ध हो सकती है। डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने बताया कि 100 ग्राम अरहर की दाल से ऊर्जा -343

किलो कैलोरी कार्बोहाइड्रेट- 62.78 ग्राम,फाइबर -15 ग्राम, प्रोटीन- 21.7 ग्राम तथा विटामिंस जैसे थायमीन (बी1)-0.64 3 मिलीग्राम,रिबोफैविविन (बी2)- 0.187 मिलीग्राम, नियासिन (बी3)-2.965 मिलीग्राम, तथा खनिज पदार्थ जैसे कैल्शियम 130 मिलीग्राम, आयरन 5.23 मिलीग्राम, मैग्नीशियम 183 मिलीग्राम, मैग्नीज 1.791 मिलीग्राम, फास्फोरस 367 मिलीग्राम, पोटेशियम 1392 मिलीग्राम, सोडियम 17 मिलीग्राम एवं जिंक 2.76 मिलीग्राम आदि पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी है। डॉक्टर मिश्रा ने किसानों को सलाह दी है कि अरहर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे नरेंद्र अरहर-1, नरेंद्र अरहर-2, आजाद अरहर, अमर, पूसा-9,बहार, मालवीय -13, मालवीय- 6 एवं आई पी ए- 203 प्रमुख है। भूमि की चयन हेतु उन्होंने बताया कि अच्छी जल निकास वाली हल्की दोमट एवं भारी मृदायें सर्वोत्तम होती हैं अरहर का बीज 12 से 15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से का कतारों से कतार की दूरी 60-75 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 20 से 25 सेंटीमीटर पर रखकर बुवाई करनी चाहिए। रोगों की रोकथाम हेतु बुवाई के पूर्व ट्राइकोडरमा विरिडी 10 ग्राम प्रति किलो बीज या थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेंडाजिम से शोधित करना चाहिए तत्पश्चात 5 ग्राम राइजोबियम + 5 ग्राम पीएसबी कल्चर से प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बोयें। उन्होंने बताया कि बुवाई से पूर्व 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम सल्फर गंधक प्रति हेक्टेयर बीज के नीचे देना चाहिए। उन्होंने सलाह दी है कि 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देने से फसल पैदावार में बढ़ोतरी होती है। डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से अरहर की खेती करते हैं तो असिंचित क्षेत्रों में 12 से 16 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा सिंचित क्षेत्रों में 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर अरहर का उत्पादन होता है।

है अब देखना है कि गांव की सफाई व्यवस्था किस तरह से दुरुस्त की जाएगी

वैज्ञानिक विधि से करें अरहर की बुवाई

स्वतंत्र भारत संवाददाताकानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर बिजेन्द्र सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने देर से अच्छी उपज के लिए करें वैज्ञानिक विधि से अरहर की बुवाई विषय पर एडवाइजरी किसानों हेतु जारी की है। डॉ मिश्रा ने बताया कि अरहर हमारे देश की प्रमुख दलहनी फसल है जिसे मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम पखवाड़े तक बुवाई की जाती है। उन्होंने कहा कि अरहर फसल द्वारा दलहन उत्पादन के साथ.साथ 15 से 2 किलोग्राम वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता में वृद्धि करती है। उन्होंने बताया कि असिंचित एवं शुष्क क्षेत्रों में अरहर की खेती लाभकारी सिद्ध हो सकती है। डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने बताया कि 1 ग्राम अरहर की दाल से ऊर्जा 343 किलो कैलोरी कार्बोहाइड्रेट. 62ण्78 ग्रामएफाइबर .15 ग्रामए प्रोटीन. 21ण्7 ग्राम मिलीग्रामएरिबोफैविविन ;बी2द्ध. ण्187 मिलीग्रामए तथा खनिज पदार्थ जैसे कैल्शियम मैग्नीशियम 183 मिलीग्रामए मैग्नीज 1ण्791 पोटेशियम 1392 मिलीग्रामए सोडियम 17 पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। जो है। डॉक्टर मिश्रा ने किसानों को सलाह दी है नरेंद्र अरहर.1ए नरेंद्र अरहर.2ए आजाद .13ए मालवीय. 6 एवं आई पी ए. 23 प्रमुख अच्छी जल निकास वाली हल्की दोमट एवं बीज 12 से 15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 2 से 25 सेंटीमीटर पर रखकर बुवाई करनी चाहिए। रोगों की रोकथाम हेतु बुवाई के पूर्व ट्राइकोडरमा विरिडी 1 ग्राम प्रति किलो बीज या थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेंडाजिम से शोधित करना चाहिए तत्पश्चात 5 ग्राम राइजोबियम 5 ग्राम पीएसबी कल्चर से प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बोयें। उन्होंने बताया कि बुवाई से पूर्व 2 किलोग्राम नत्रजनए 5 किलोग्राम फास्फोरसए 2 किलोग्राम पोटाश तथा 2 किलोग्राम सल्फर गंधक प्रति हेक्टेयर बीज के नीचे देना चाहिए। उन्होंने सलाह दी है कि 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देने से फसल पैदावार में बढ़ोतरी होती है। डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से अरहर की खेती करते हैं तो असिंचित क्षेत्रों में 12 से 16 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा सिंचित क्षेत्रों में 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर अरहर का उत्पादन होता है।

तथा विटामिंस जैसे थायमीन ;बी1द्ध.ण्64 3 मिलीग्रामए नियासिन ;बी3द्ध.2ण्965 13 मिलीग्रामए आयरन 5ण्23 मिलीग्रामए मिलीग्रामए फास्फोरस 367 मिलीग्रामए मिलीग्राम एवं जिंक 2ण्76 मिलीग्राम आदि मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी कि अरहर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे अरहरए अमरए पूसा.9एबहारए मालवीय है। भूमि की चयन हेतु उन्होंने बताया कि भारी मृदायें सर्वोत्तम होती हैं अरहर का दर से का कतारों से कतार की दूरी 6.75

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश
बॉलीवुड और हॉलीवुड के लिए खुले धरती... 12 | रॉयल कैफे समूह द्वारा किया गया विशाल... 05
जन एक्सप्रेस

@janexpressnews | janexpresslive | janexpresslive | www.janexpresslive.com/epaper
लखनऊ | वर्ष: 14 | अंक: 220 | मूल्य: 3.00/- | पेज: 12 | बुधवार | 24 मई, 2023

सीएसए ने अरहर की अच्छी पैदावार करने के लिए जारी की एडवाइजरी

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉ. अखिलेश मिश्रा ने बीते दिन मंगलवार को किसानों के लिए अच्छी उपज के लिए वैज्ञानिक विधि से अरहर की बुवाई विषय पर एडवाइजरी जारी की।

डॉ मिश्रा ने बताया कि अरहर हमारे देश की प्रमुख दलहनी फसल है जिसे मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम पखवाड़े तक बुवाई की जाती है। उन्होंने बताया कि असिंचित एवं शुष्क क्षेत्रों में अरहर की खेती लाभकारी होती है। उन्होंने बताया कि अरहर की खेती के लिए अच्छी जल निकास वाली हल्की दोमट एवं भारी मृदायें सर्वोत्तम होती हैं तथा रोगों की रोकथाम के लिए बुवाई के पूर्व ट्राइकोडरमा विरिडी 10 ग्राम प्रति किलो बीज या थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेडाजिम से शोधित करना चाहिए तत्पश्चात 5 ग्राम राइजोबियम + 5 ग्राम पीएसबी कल्चर से प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बोयें। उन्होंने बताया कि बुवाई से पूर्व 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम सल्फर गंधक प्रति हेक्टेयर बीज के नीचे देना चाहिए। उन्होंने सलाह दी है कि 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देने से फसल पैदावार में बढ़ोत्तरी होती है। डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से अरहर की खेती करते हैं तो असिंचित क्षेत्रों में 12 से 16 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा सिंचित क्षेत्रों में 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर अरहर का उत्पादन होता है।

यह हैं अरहर की प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां

नरेंद्र अरहर-1, नरेंद्र अरहर-2, आजाद अरहर, अमर, पूसा-9,बहार, मालवीय -13, मालवीय- 6 एवं आई पी ए- 203 अरहर की प्रमुख प्रजातियां है। 100 ग्राम अरहर की दाल से ऊर्जा -343 किलो कैलोरी, कार्बोहाइड्रेट- 62.78 ग्राम,फाइबर - 15 ग्राम, प्रोटीन- 21.7 ग्राम तथा विटामिंस जैसे थायमीन (बी1)-0.643 मिलीग्राम, रिबोफैविविन (बी2)- 0.187 मिलीग्राम, नियासिन (बी3)- 2.965 मिलीग्राम, तथा खनिज पदार्थ जैसे कैल्शियम 130 मिलीग्राम, आयरन 5.23 मिलीग्राम, मैग्नीशियम 183 मिलीग्राम, मैग्नीज 1.791 मिलीग्राम, फास्फोरस 367 मिलीग्राम, पोटेशियम 1392 मिलीग्राम, सोडियम 17 मिलीग्राम एवं जिंक 2.76 मिलीग्राम आदि पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते हैं जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी है।